

— समुप, part. ०कृत zusammen bereitstehend ÇĀṆKH. Çr. 17, 6, 3. — caus. zuriisten, zurechtmachen: पत्तिर्दे भवता किञ्चित्प्रीत्या समुपकल्पितम् R. 2, 30, 29. कार्यं समुपकल्पिते MBu. 13, 5063.

— परि, partic. परिकृत hie und da sich vorfindend, da seiend: तथा-ष्टपादिका लताः । तत्र तत्र परिकृता दर्श सः MBu. 13, 2831. — caus. 1) festsetzen, bestimmen, zu Etwas bestimmen, aussersehen, für Etwas ansehen: निश्चिते गमने ऽन्येष्वुर्लभे च परिकल्पिते KATHĀS. 13, 127. तस्यापि — संकेतकं द्वितीयस्मिन्प्रकरे पर्यकल्प्यत 4, 37. RĪĠA-TAR. 3, 111. दशावरा वा परिपथ्यं धर्मं परिकल्पयेत् M. 12, 110. गौर्मूल्यं परिकल्प्यताम् eine Kuh werde als Preis bestimmt MBu. 13, 2689. इति वेदेनात्मपुत्रिभिः पुस्त्यापरिकल्पितम् 5804. उभे संध्ये शयानस्य यत्पापं परिकल्प्यते die Sünde, welche für denjenigen, welcher während beider Dämmerungen schläft, festgesetzt ist R. 2, 73, 31. सर्वागमानामाचारः प्रथमः परिकल्प्यते MBu. 13, 7073. 3, 14463. मिथुनं परिकल्पितं (zu einem Pärchen aussersehen) त्वया सहकारः पालिनी च नन्विमौ RAGH. 8, 60. 13, 49. KUMĀRAS. 1, 2. पदीयमपि प्रवृत्तिश्चेतस्य परमात्मन आत्मप्रयोजनोपयोगिनी परिकल्प्येत BRAHMA-S. in WIND. Sāncara 142. Gīt. 4, 8. — 2) ausführen, bewerkstelligen, machen: संधिं च विप्रहं यानमासनं संभ्रयं तथा द्विधीभावं गुणानेतान्यथावत्परिकल्पयेत् ॥ JĀĠN. 1, 346. अयमेकाकी नूपुरा न विराजते । धनुर्ग्रस्तदेतस्य द्वितीयः परिकल्प्यताम् KATHĀS. 23, 173. परिकल्पितसन्धयोगा ÇĀK. 42. परिकल्पितसंनिध्या (सरस्वती) काले काले च वन्दिषु RAGH. 4, 6. शिष्यवर्गपरिकल्पितार्हणम् (तपोवनम्) 11, 23. दशधा in zehn Theile theilen M. 9, 132. स पार्थवाणैर्वर्जुधा खण्डशः परिकल्पितः MBu. 1, 5304. — 3) hinstellen: यस्मिन् (द्विषे) वृक्षपुष्करम् — भगवतः कमलासनस्याध्यासनं परिकल्पितम् Bhāg. P. 5, 20, 30. — 4) einladen, hinzuziehen: न त्वेव वणिजं तात आद्वे च परिकल्पयेत् MBu. 13, 1596. — 5) परिकल्पित ausgerüstet mit, versehen mit, erfüllt von: आशंसापरिकल्पित Sāh. D. 78, 9.

— प्र 1) vor sich gehen, von Statten gehen: प्र गौ वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम् AV. 5, 7, 3. प्रकल्प्यति च तस्यार्थः BHATT. 16, 11. कृतार्थो ऽहं भविष्यामि तव चार्थः प्रकल्प्यते (प्रकल्पते?) R. 2, 31, 24. प्रकल्पन् n. das Vorsichgehen, von-Statten-Gehen KĀTJ. Çr. 25, 7, 10. प्रकल्पम् adv. facile, leicht: प्रकल्पं देवास्य स्त्री विनायते ÇAT. Br. 4, 3, 3, 6. — 2) sich zu Etwas eignen, passen; mit dem infin.: कृत्वाकाष्ठे पुरोडाशमवदातुं प्रकल्पतः Schol. zu KĀTJ. Çr. 1, 2, 3 (S. 24, Z. 2). — 3) प्रकल्पं zugerüstet, zurechtgemacht VID. 298. BHATT. 2, 29. — Vgl. अग्रकल्प. — caus. 1) Jmd (acc.) voranstellen, Jmd Ehre erweisen, das Geleite geben(?): एवं शिवं कैवेनमुपस्पृशति प्र कैवेनं कल्पयति ÇAT. Br. 12, 5, 2, 8. (नन्त्राणि) प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्योति AV. 19, 8, 1. — 2) zubereiten, zuriisten M. 3, 264. MBu. 13, 4995. R. 1, 17, 20. SUGR. 2, 220, 20. 221, 16. प्रकल्पमानेषु (०कल्प्यमानेषु?) गजेषु सैन्यमानेषु वाजिषु PAṆKĀT. 218, 7. — 3) anweisen, festsetzen, bestimmen: वृत्तिं धर्म्यां प्रकल्पयेत् M. 7, 135. 11, 22. JĀĠN. 3, 44. प्रायश्चित्तम् M. 11, 209. सद्दिवाचरितं यत्स्याद्दार्मिकैश्च द्विजातिभिः । तत् — प्रकल्पयेत् 8, 46. दण्डम् 322. 324. 9, 236. 293. समानंशान् 116. — 4) hinsetzen, hinstellen: पथि यस्तं प्रकल्पयेत् MBu. 13, 2632. einsetzen: यास्तु मातरः पूर्वं लोकस्यास्य प्रकल्पिताः 3, 14469. in Etwas einsetzen, für Etwas aussersehen; mit dem loc. eines nom. abstr.: मृत्पात्रस्य क्रियायां हि दण्डचक्रादयो यथा । कारणावै प्रकल्प्यन्ते MBu.

13, 38. मयं प्रकल्प्य वत्सवे Bhāg. P. 4, 18, 20. zu Etwas aussersehen, mit zwei acc.: प्रकल्प्य वत्सं कपिलम् 19. श्रेष्ठ एष प्रकल्प्यताम् 9, 16, 30. — 5) sich an Etwas machen: द्वारि द्वारि च पौराणां पुष्पभङ्गः प्रकल्पितः N. 25, 5. अश्रु प्रकल्पितम् es wurden Thränen vergossen AMAR. 73.

— सप्र, partic. संप्रकृत bereit: रुचिः (शयन) BHATT. 3, 44. — caus. einsetzen: अश्रुः ऽग्निरिह लोकानां ब्रह्मणा संप्रकल्पितः MBu. 3, 14110. festsetzen, bestimmen KĀTJ. bei KULL. zu M. 8, 153.

— प्रति zu Jmds (acc.) Diensten bereit sein, Jmd empfangen: राजानमनैः पानैरावस्यैः प्रतिकल्पते ÇAT. Br. 14, 7, 1, 43. — caus. anordnen: स विश्वा प्रति चाकूपं स्रुतं स्रुतं वशी AV. 6, 36, 2. ÇĀṆKH.: चाकूपत्, SV.: पप्रथे.

— वि wechseln (neutr.), sich verwechseln lassen mit (instr.): मुखस्य वर्णा न विकल्पते ऽस्य MBu. 3, 697. काचो मणिर्मणिः काचो येषां बुद्धिर्विकल्पते PAṆKĀT. I, 87. अथेदमध्याच्यं कर्मणे वि कल्पते AV. 4, 7, 2. नीवारा व्रीहिभिर्विकल्पेनैकार्यत्वात् Sch. zu KĀTJ. Çr. 1, 4, 2. in Frage kommen, dem Zweifel unterworfen sein: कथंचिन्न विकल्पते विद्वद्भिश्चित्ता नयाः PAṆKĀT. I, 383. तेनाणादीनां परत्वं न विकल्पते Sch. zu P. 3, 1, 2. zweifelhaft —, unschlüssig sein: आदिष्टो न विकल्पते Hīt. II, 53. — caus. 1) verschieden ausrücken; verfertigen, zusammensetzen, bilden: तौ ब्रह्मणा व्यर्हं कल्पयामि AV. 12, 2, 32. स भूतं व्यकल्पयत् 10, 6, 21. देवाः संगत्य यत्सर्वं स्रुतं व्यकल्पयन् 9, 4, 15. यत्पुरुषं व्यर्धुः कतिधा व्यकल्पयन् RV. 10, 90, 12. चतुर्दशधा विकल्पितः Bhāg. P. 5, 26, 38. सत्त्वादिगुणविशेषविकल्पितकुशलकुशलसमवहाराः 14, 1. परिहृत्सविकल्पितं (erfunden? v. l. für विज्ञितमित) सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः ÇĀK. 51. — 2) verwechseln, mit etwas Anderm vertauschen Bhāg. P. 9, 16, 37. neben etwas Anderm zulassen, in Frage stellen, für zweifelhaft halten, in Zweifel über Etwas sein, mit Misstrauen ansehen: तेन सर्वः सुतो विकल्प्यते Siddh. K. zu P. 8, 2, 86. P. 5, 1, 29, Sch. Vor. 4, 24. वाचो विकल्पयति Prab. 106, 17. नीरसायां रसे वालो बालिकायां विकल्पयेत् PAṆKĀT. IV, 62. 89, 1. एकमेव यदा ब्रह्म सत्यमन्यद्विकल्पितम् Prab. 91, 14. कृष्णसखो धात्रा विकल्पितः Bhāg. P. 4, 13, 1. hin und her überlegen: किं तत्कथं वेत्युपलब्धसंज्ञा विकल्पयतो ऽपि न संप्रतीयुः BHATT. 11, 10.

— सम् nach Etwas Verlangen tragen, begehren: तस्मान्नेनेभ्यं (तेन d. i. मनसा) संकल्पते संकल्पनीयं चासंकल्पनीयं च KūṇD. Up. 1, 2, 6. समकृपतां व्यावापृयिवी समकल्पेतां वायुश्लाकां च समकल्पतामापश्य त्रेण्य तेषां संकल्प्यै वर्षं संकल्पते वर्षस्य संकल्प्या अन्नं संकल्पते u. s. w. 7, 4, 2. संकल्पान् (लोकान्) 3. अयाचितमसंकल्पमुपपन्नं यदृच्छ्या (भैक्ष्यम्) MBu. 14, 1277. — caus. 1) aneinanderreihen, zusammenfügen: लोमं लोमानां संकल्पया त्वचा कल्पया त्वचम् AV. 4, 12, 5. 6, 109, 1. schaffen: इदं स्म समकल्पयन् Bhāg. P. 3, 20, 11. — 2) im Sinne haben, streben nach, beabsichtigen, wollen (mit und ohne Beisatz von मनसा): मनसा संकल्पयति AV. 12, 4, 31. ÇAT. Br. 3, 4, 3, 6. 7. 10, 5, 2, 15. 11, 7, 1, 2. यत्कल्याणं संकल्पयति 14, 4, 1, 7. यदा वै संकल्पयते KūṇD. Up. 7, 4, 1. यदासंकल्पितं लोकम् PRAÇNOP. 3, 10. यदासंकल्पितांश्चेत् सर्वान्कामान्समभ्रुते M. 2, 5. संकल्प्य मनसा यत्नम् MBu. 14, 122. 3, 17437. (अरूणाः) आदित्यरथमध्यास्ते सारथ्यं समकल्पयत् MBu. 1, 1092. संकल्प्य तेषां कुल्यानि 13, 1099. 13, 4345. fg. 6024. R. 2, 22, 24. 4, 27, 19. अतीतमपि न स्मरन्पि च भाव्यसंकल्पयन् BHATT. 3, 63. संकल्पते ऽर्थे KUMĀRAS. 3, 11. ÇĀK. 88. Bhāg. P. 2, 7, 52.